PSC ACADEMY

HISTORY OF CHHATTISGARH

By RAKESH SAO

WWW.PSCACADEMY.IN

2ND Edition 2018

Printing and Publishing Rights with the Publishers….

No part of this book may be reproduced or copied in any form or by any means without the written permission of the publishers. Breach of this condition is liable for legal action.

Information and Facts given in this book is yet to be authenticated. Please refer and consist with original source.

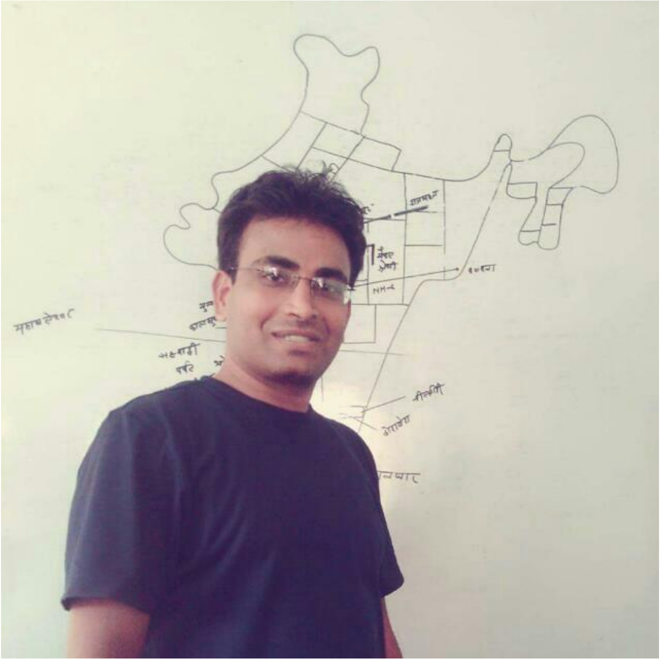

RAKESH SAO

CSE (BIT, Durg)

DIRECTOR (PSC ACADEMY)

फणिनाग वंश

- कवर्धा का फणि नागवंश (11 वीं – 1413 ई.)
- भोरमदेव मंदिर (1089)
- मड़वा महल / दूल्हादेव मंदिर (1349)
- छेरकी महल (शिव मंदिर)
- कवर्धा महल (1336)
- महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
- मुख्य परीक्षा आधारित महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

कवर्धा का फणि नागवंश (11 वीं – 1413 ई.)

- शासनकाल - **11 वीं शताब्दी से 1413 ई.**
- संस्थापक - **अहिराज**
- अंतिम शासक - **मोनिंगदेव**
- राजधानी - **कवर्धा**
- धर्म - **शैव धर्म**
- मंदिर - **शिव**
- साक्ष्य - **मड़वा महल अभिलेख**
- अधीनता - **कल्चुरी वंश**
- समकालीन - **कल्चुरी वंश**

फणिनाग वंश के शासक

क्र.	शासक	क्र.	शासक	क्र.	शासक	क्र.	शासक
1	अहिराज	7	नलदेव	13	जनपाल	19	अर्जुन
2	राजमल	8	भुवनपाल	14	यशोराज	20	भीम
3	धरणीधर	9	कीर्तिपाल	15	कन्हर देव	21	लक्ष्मण
4	महिलदेव	10	महिपाल	16	लक्ष्मी वर्मा	22	रामचंद्रदेव
5	सर्पवंदन	11	विषयपाल	17	खडंग देव	23	मोनिंगदेव
6	गोपालदेव	12	जनहू	18	भुवनेकमल्ल		

फणिनाग वंश के प्रमुख शासक

प्रमुख शासक	विशेष
अहिराज	▪ संस्थापक ▪ राजधानी - **कवर्धा**
गोपालदेव	▪ **1089** - **भोरमदेव मंदिर** का निर्माण करवाया | ▪ अधीनता - **जाजल्यदेव I** (कल्चुरी वंश)
रामचंद्रदेव	▪ **1349** - **मड़वा महल / दूल्हादेव महल** व **छेरकी महल** का निर्माण करवाया | ▪ **रामचंद्र देव** ने मड़वा महल में ही कल्चुरी राजकुमारी **अम्बिका देवी** से विवाह किया |
मोनिंगदेव	▪ 1413 - रायपुर कल्चुरी वंश के शासक **ब्रह्मदेव** ने **मोनिंगदेव** को युद्ध में पराजित किया |

कवर्धा का फणि नागवंश (11 वीं – 1413 ई.)

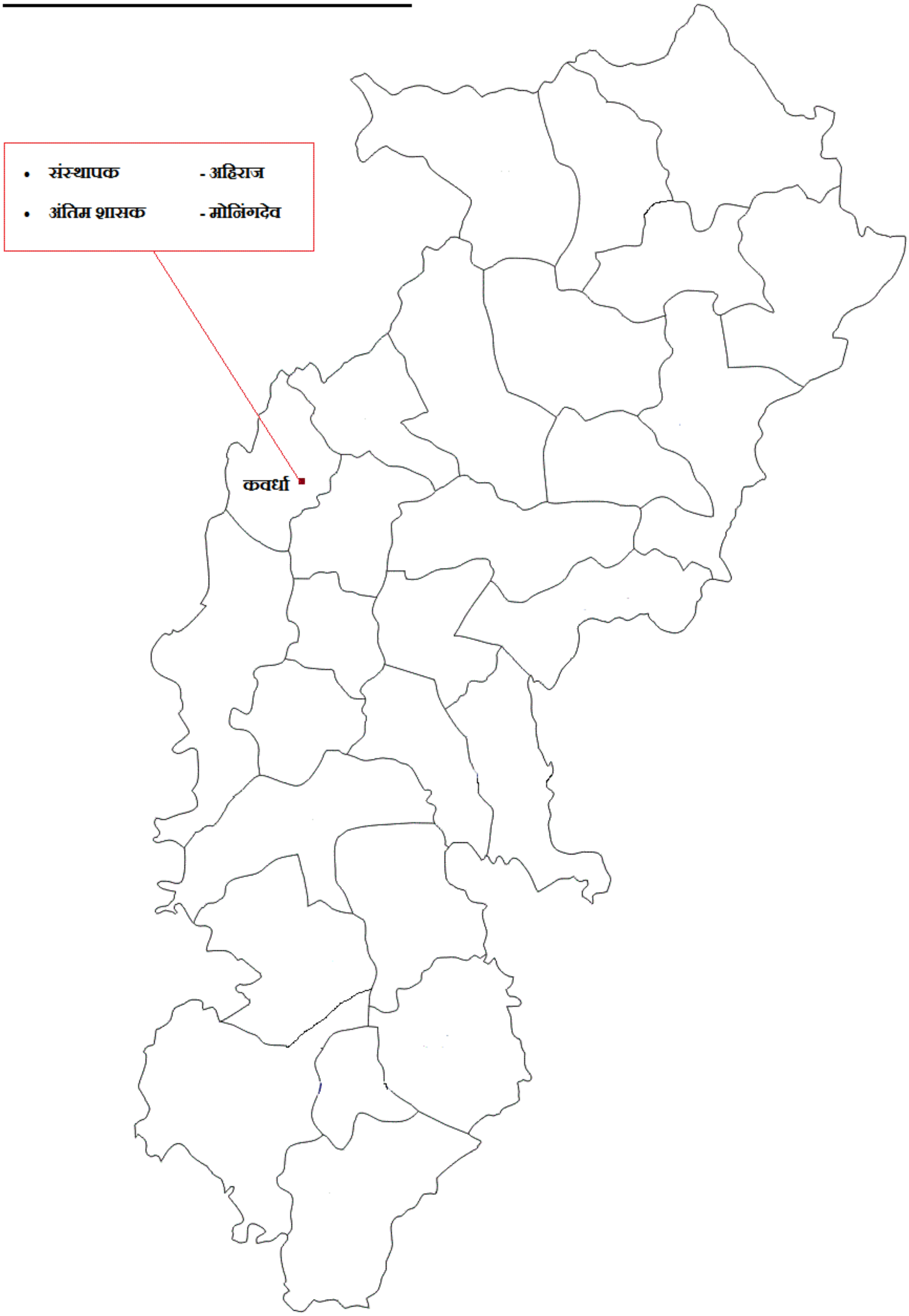

कवर्धा का फणि नागवंश (11 वीं – 1413 ई.)

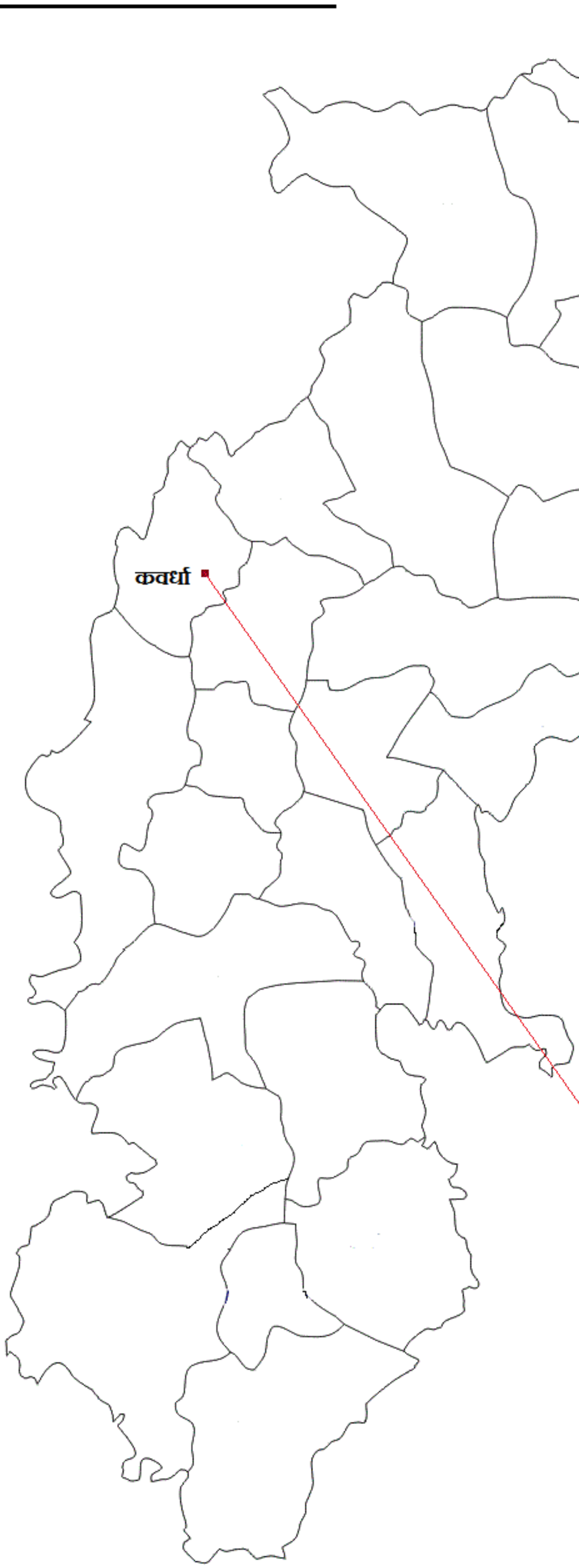

फणिनाग वंश

- शासनकाल - 11 वीं शताब्दी से 1413 ई.
- संस्थापक - अहिराज
- अंतिम शासक - मोनिंगदेव
- राजधानी - कवर्धा
- धर्म - शैव धर्म
- मंदिर - शिव
- साक्ष्य - मड़वा महल अभिलेख
- अधीनता - कल्चुरी वंश
- समकालीन - कल्चुरी वंश

कवर्धा का फणि नागवंश (11 वीं – 1413 ई.)

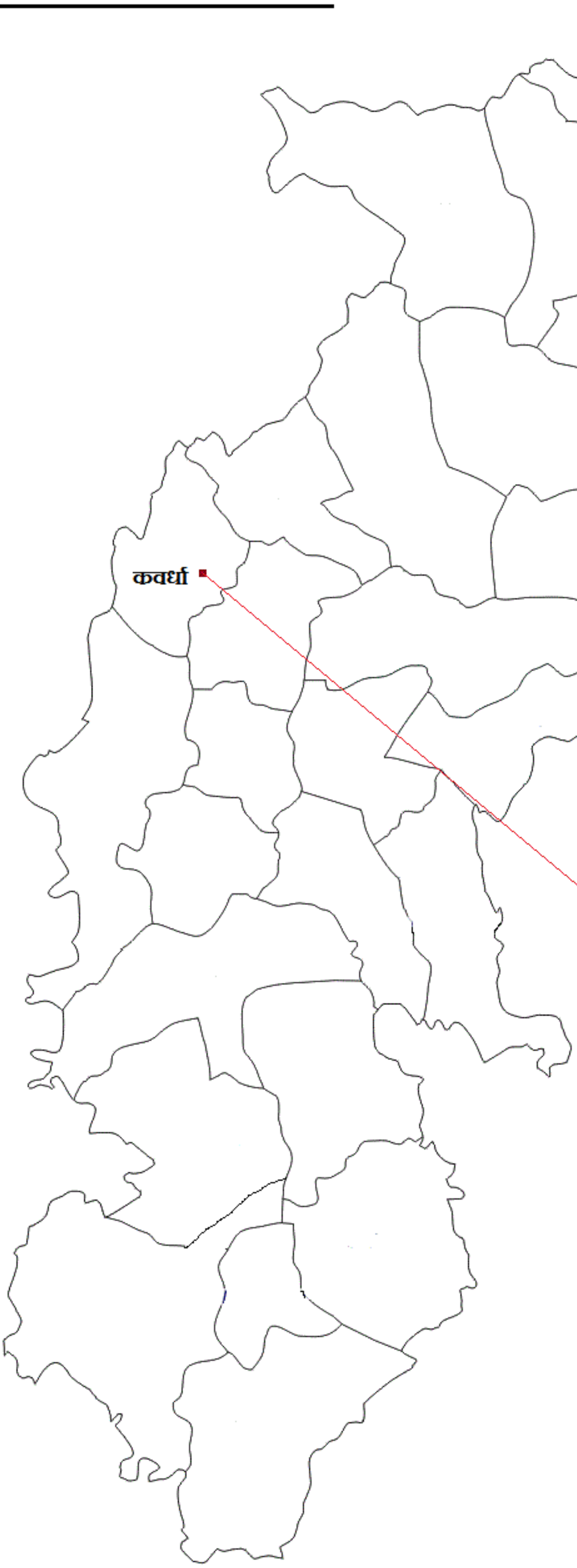

फणिनाग वंश के शासक

अहिराज
राजमल
धरणीधर
महिलदेव

सर्पवंदन
गोपालदेव
नलदेव
भुवनपाल

कीर्तिपाल
महिपाल
विषयपाल
जनहू

जनपाल
यशोराज
कन्हर देव
लक्ष्मी वर्मा

खडंग देव
भुवनेकमल्ल
अर्जुन
भीम

लक्ष्मण
रामचंद्रदेव
मोनिंगदेव

कवर्धा का फणि नागवंश (11 वीं – 1413 ई.)

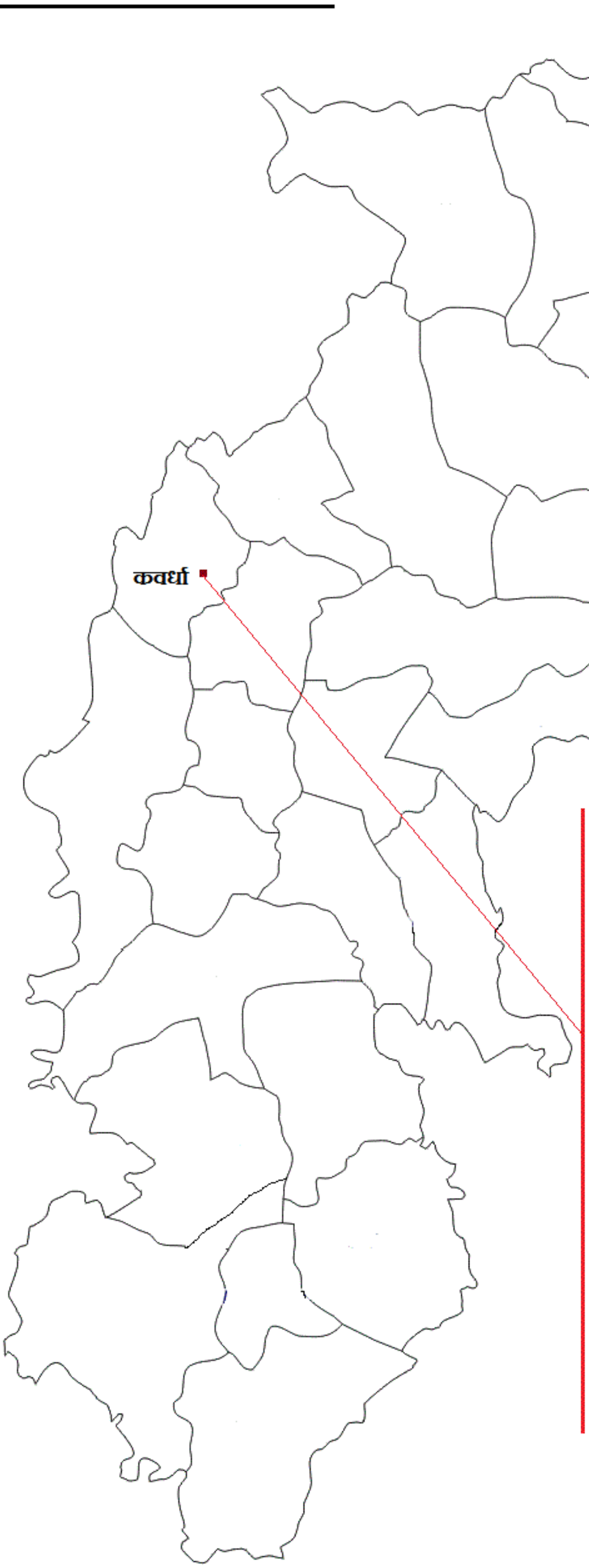

गोपालदेव

- 1089 - भोरमदेव मंदिर का निर्माण करवाया |
- अधीनता - जाजल्यदेव I (कल्चुरी वंश)

रामचंद्रदेव

- 1349 - मड़वा महल / दूल्हादेव महल व छेरकी महल का निर्माण करवाया |
- रामचंद्र देव ने मड़वा महल में ही कल्चुरी राजकुमारी अम्बिका देवी से विवाह किया |

मोनिंगदेव

- 1413 - रायपुर कल्चुरी वंश के शासक ब्रह्मदेव ने मोनिंगदेव को युद्ध में पराजित किया |

भोरमदेव मंदिर (1089)

भोरमदेव मंदिर (1089)

भोरमदेव मंदिर (गोपालदेव)

जलाधारी शिवलिंग

- स्मारक - राज्य संरक्षित स्मारक
- स्थान - चौरा ग्राम (कवर्धा)
- संस्थापक - गोपालदेव (फणिनाग वंश)
- भोरमदेव - गोड़ आदिवासी देवता
- मंदिर - शिव मंदिर
- मंदिर शैली - चंदेल – नागर शैली (16 स्तंभों पर आधारित मण्डप)
- प्रतिमा - जलाधारी शिवलिंग (गर्भगृह में काले पत्थर से निर्मित)
- **संज्ञा**
  - छत्तीसगढ़ का **खजुराहो** (चंदेल वंशीय खजुराहो मंदिर के सदृश्य)
  - छत्तीसगढ़ का **कोणार्क मंदिर**
- विशेष - **भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग** के **प्रथम महानिदेशक कनिंघम** सर्वप्रथम भोरमदेव पहुंचे |
- **मंदिर की संरचना**
  - छत्तीसगढ़ का **खजुराहो** (चंदेल वंशीय खजुराहो मंदिर के सदृश्य)
  - छत्तीसगढ़ का **कोणार्क मंदिर**
  - मंदिर के मुख पूर्व दिशा की ओर है |
  - मंदिर में 3 प्रवेश द्वार है |
  - मंदिर एक 5 फीट ऊँचे चबूतरे पर बनाया गया है |
  - मण्डप की लम्बाई 60 फीट तथा चौड़ाई 40 फीट है |
  - मण्डप को 16 खंभों ने संभाल रखा है |
  - गर्भगृह में **काले पत्थर से निर्मित एक शिवलिंग** स्थापित है |
  - मंदिर के बाहरी दीवारों में **“कामसूत्र” आसन के 54 कामुक मूर्तियाँ** उत्कीर्ण है |

मड़वा महल (दूल्हादेव मंदिर) (1349)

मड़वा महल (1349)

मड़वा महल (रामचंद्रदेव)

जलाधारी शिवलिंग

- स्मारक - राज्य संरक्षित स्मारक
- स्थान - चौरा ग्राम (कवर्धा)
- संस्थापक - रामचंद्रदेव (फणिनाग वंश)
- भोरमदेव - गोड़ आदिवासी देवता
- मंदिर - शिव मंदिर
- मंदिर शैली - चंदेल – नागर शैली (16 स्तंभों पर आधारित मण्डप)
- प्रतिमा - जलाधारी शिवलिंग (गर्भगृह में काले पत्थर से निर्मित)
- **संज्ञा** - विवाह का प्रतीक
- **विशेष** **- रामचंद्र देव** ने मड़वा महल में ही कल्चुरी राजकुमारी **अम्बिका देवी** से विवाह किया |
- **संरचना**
  - मण्डप को 16 खंभों ने संभाल रखा है |
  - गर्भगृह में **काले पत्थर से निर्मित एक शिवलिंग** स्थापित है |
  - मंदिर के बाहरी दीवारों में **"कामसूत्र" आसन के 54 कामुक मूर्तियाँ** उत्कीर्ण है |

छेरकी महल (शिव मंदिर)

छेरकी महल

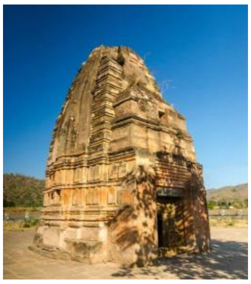
छेरकी महल

जलाधारी शिवलिंग

- स्मारक - राज्य संरक्षित स्मारक
- स्थान - चौरा ग्राम (कवर्धा)
- संस्थापक - रामचंद्रदेव (फणिनाग वंश)
- भोरमदेव - गोड़ आदिवासी देवता
- मंदिर - शिव मंदिर
- मंदिर शैली - चंदेल – नागर शैली (16 स्तंभों पर आधारित मण्डप)
- प्रतिमा - जलाधारी शिवलिंग (गर्भगृह में काले पत्थर से निर्मित)
- विशेष - बकरी की सुगंध

कवर्धा महल (1336)

कवर्धा महल

- स्थान - कवर्धा
- संस्थापक - महाराजा धरमराज सिंह
- उपयोग - इटैलियन मार्बल व सफ़ेद संगमरमर
- **विशेष**
  - कवर्धा महल के प्रवेश द्वार पर **हाथी दरवाजा या हाथी गेट** है |
  - कवर्धा महल के दरबार के गुम्बद पर **सोने व चांदी** से नक्काशी की गई है |

कवर्धा स्थित महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल

क्र.	पर्यटक स्थल	संस्थापक	स्थान	नदी
1	राधाकृष्ण मंदिर	राजा उजियार सिंह	चौरा ग्राम (कवर्धा)	
2	उजियार सागर	राजा उजियार सिंह	चौरा ग्राम (कवर्धा)	
3	मदन मंजरी महल मंदिर		चौरा ग्राम (कवर्धा)	
4	लोहारा बावली	राजा बैजनाथ सिंह	कवर्धा	
5	बिरसा लोहारा		कवर्धा	
6	सतखण्डा महल		कवर्धा	
7	कंकालिन माता मूर्ति (पचराही)		बोड़ला (कवर्धा)	हाफ़ नदी
8	जैन तीर्थ बकेला		बोड़ला (कवर्धा)	हाफ़ नदी
9	अष्ट मंदिर रामचुवा		जैतपुरी ग्राम (कवर्धा)	

जैन तीर्थ बकेला

- स्थान - बकेला , बोड़ला (जिला – कबीरधाम)
- नदी तट - हाफ़ नदी
- उल्लेख - **अलेक्जेंडर कनिंघम** द्वारा
- **प्रमुख उत्खनन**
  - 1978 - 51 इंच की जैन तीर्थकर **पार्श्वनाथ की प्रतिमा**

पचराही पुरातात्विक स्थल (हाफ नदी)

- स्मारक - प्रस्तावित राज्य संरक्षित स्मारक
- स्थान - पचराही , बोड़ला (जिला – कबीरधाम)
- नदी तट - हाफ़ नदी (मैकल श्रेणी)
- उल्लेख - **अलेक्जेंडर कनिंघम** द्वारा
- **प्रमुख खोज**
  - कंकालिन माता की प्रतिमा
  - शिव मंदिर (पंचायतन शैली)
  - 15 करोड़ वर्ष प्राचीन **घोंघा (जलीय मोलस्क)** का जीवाश्म
  - सोमवंशी राजाओं में शिलालेख

भोरमदेव मंदिर (1089)

भोरमदेव मंदिर (1089)

- संस्थापक - गोपालदेव (फणिनाग वंश)
- स्थान - चौरा ग्राम (कवर्धा)
- स्मारक - राज्य संरक्षित स्मारक
- भोरमदेव - गोड़ आदिवासी देवता
- शैली - चंदेल-नागर शैली
- प्रतिमा - शिव मंदिर
  (गर्भगृह में काले पत्थर से निर्मित)
- संज्ञा
  - छत्तीसगढ़ का खजुराहो
    (चंदेल वंशीय खजुराहो मंदिर के सदृश्य)
  - छत्तीसगढ़ का कोणार्क मंदिर
- विशेष - भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग के प्रथम महानिदेशक कनिंघम सर्वप्रथम भोरमदेव पहुंचे।
- संरचना
  - मंदिर के मुख पूर्व दिशा की ओर है।
  - मंदिर में 3 प्रवेश द्वार है।
  - मंदिर एक 5 फीट ऊँचे चबूतरे पर बनाया गया है।
  - मण्डप की लम्बाई 60 फीट तथा चौड़ाई 40 फीट है।
  - मण्डप को 16 खंभों ने संभाल रखा है।
  - गर्भगृह में काले पत्थर से निर्मित एक शिवलिंग स्थापित है।
  - मंदिर के बाहरी दीवारों में "कामसूत्र" आसन के 54 कामुक मूर्तियाँ उत्कीर्ण है।

मड़वा महल / दूल्हादेव मंदिर (1349)

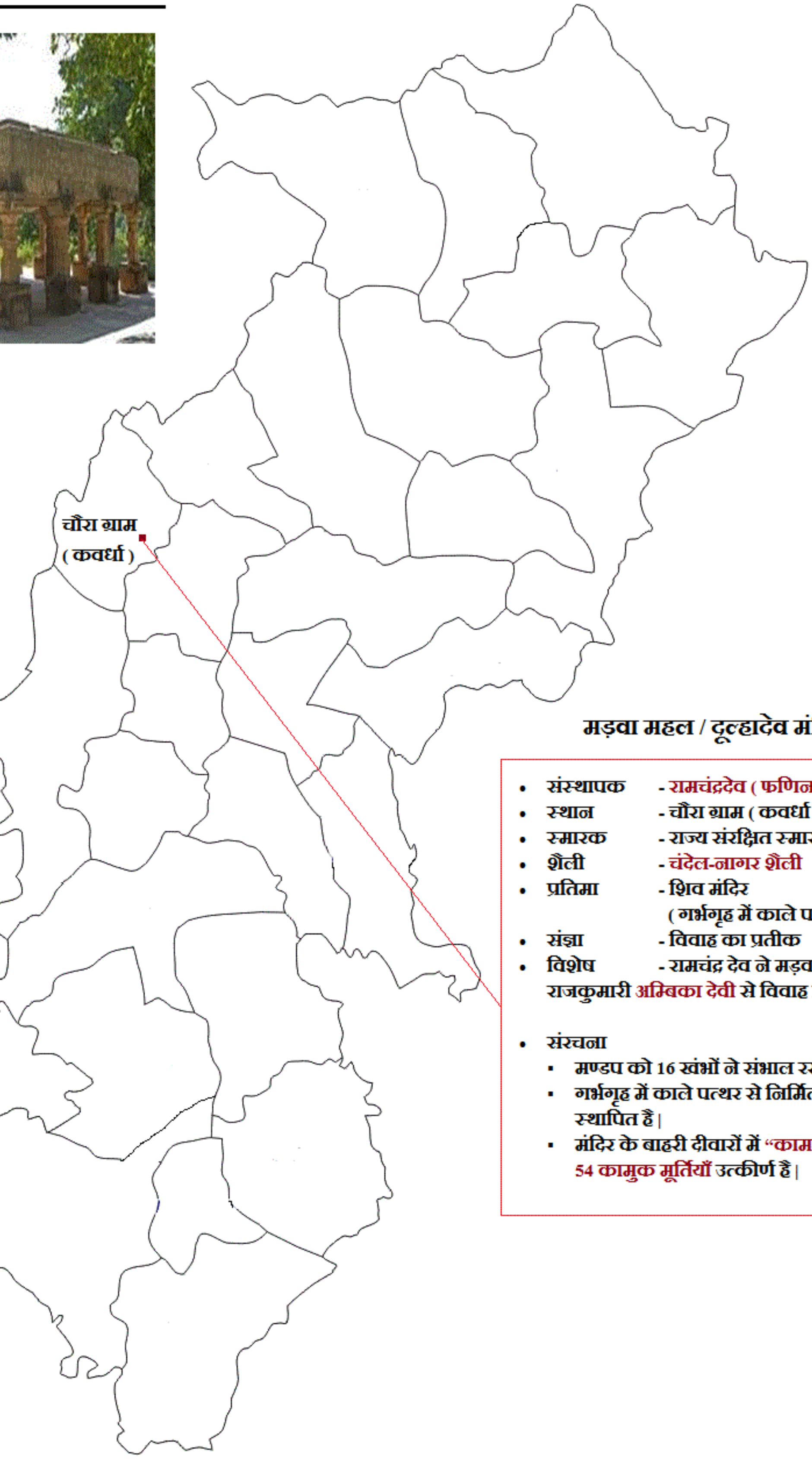

मड़वा महल / दूल्हादेव मंदिर (1349)

- संस्थापक - रामचंद्रदेव (फणिनाग वंश)
- स्थान - चौरा ग्राम (कवर्धा)
- स्मारक - राज्य संरक्षित स्मारक
- शैली - चंदेल-नागर शैली
- प्रतिमा - शिव मंदिर
  (गर्भगृह में काले पत्थर से निर्मित)
- संज्ञा - विवाह का प्रतीक
- विशेष - रामचंद्र देव ने मड़वा महल में ही कल्चुरी राजकुमारी अम्बिका देवी से विवाह किया |

- संरचना
  - मण्डप को 16 खंभों ने संभाल रखा है |
  - गर्भगृह में काले पत्थर से निर्मित एक शिवलिंग स्थापित है |
  - मंदिर के बाहरी दीवारों में "कामसूत्र" आसन के 54 कामुक मूर्तियाँ उत्कीर्ण है |

छेरकी महल (शिव मंदिर)

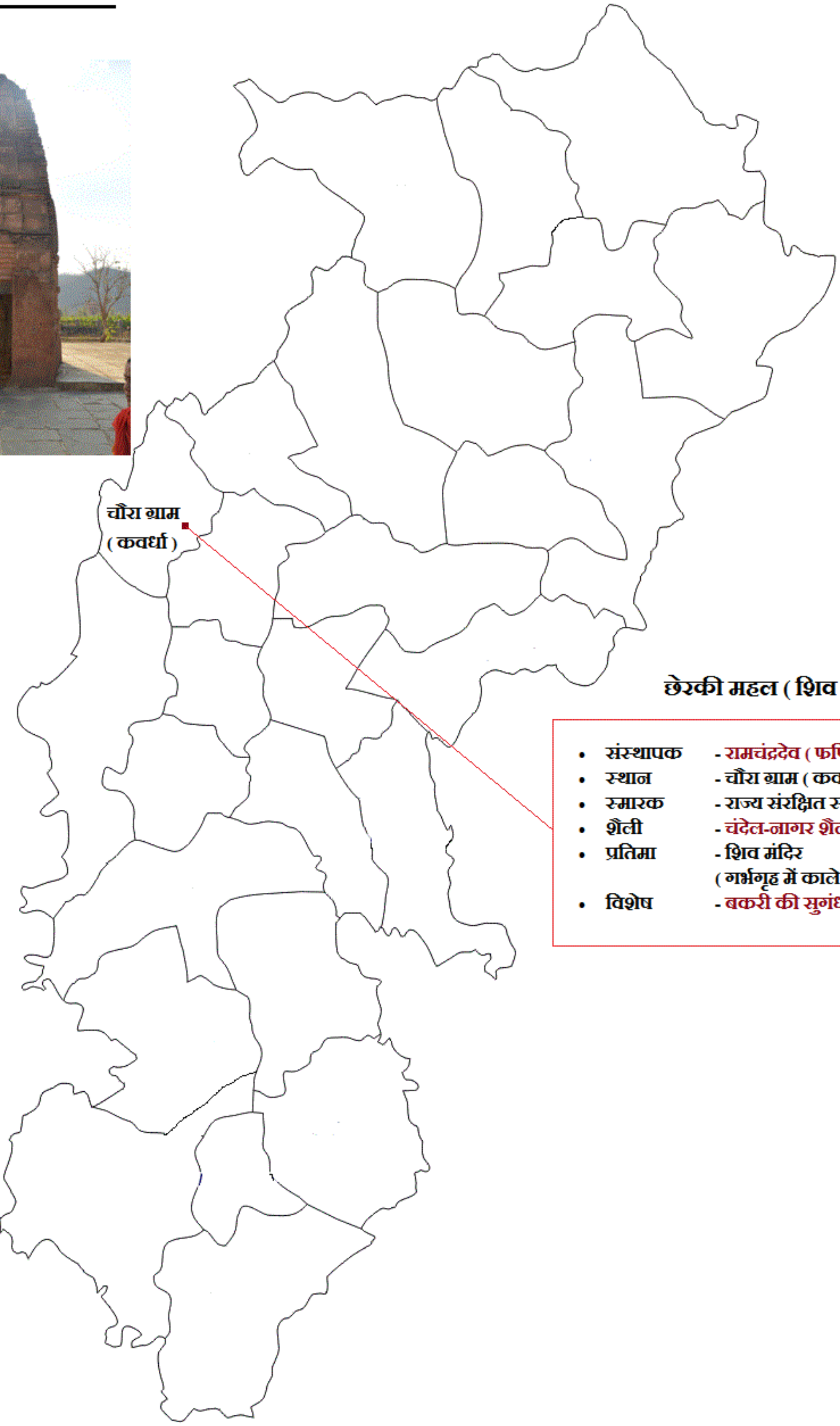

छेरकी महल (शिव मंदिर)

- संस्थापक - रामचंद्रदेव (फणिनाग वंश)
- स्थान - चौरा ग्राम (कवर्धा)
- स्मारक - राज्य संरक्षित स्मारक
- शैली - चंदेल-नागर शैली
- प्रतिमा - शिव मंदिर
  (गर्भगृह में काले पत्थर से निर्मित)
- विशेष - बकरी की सुगंध

कवर्धा महल (1336)

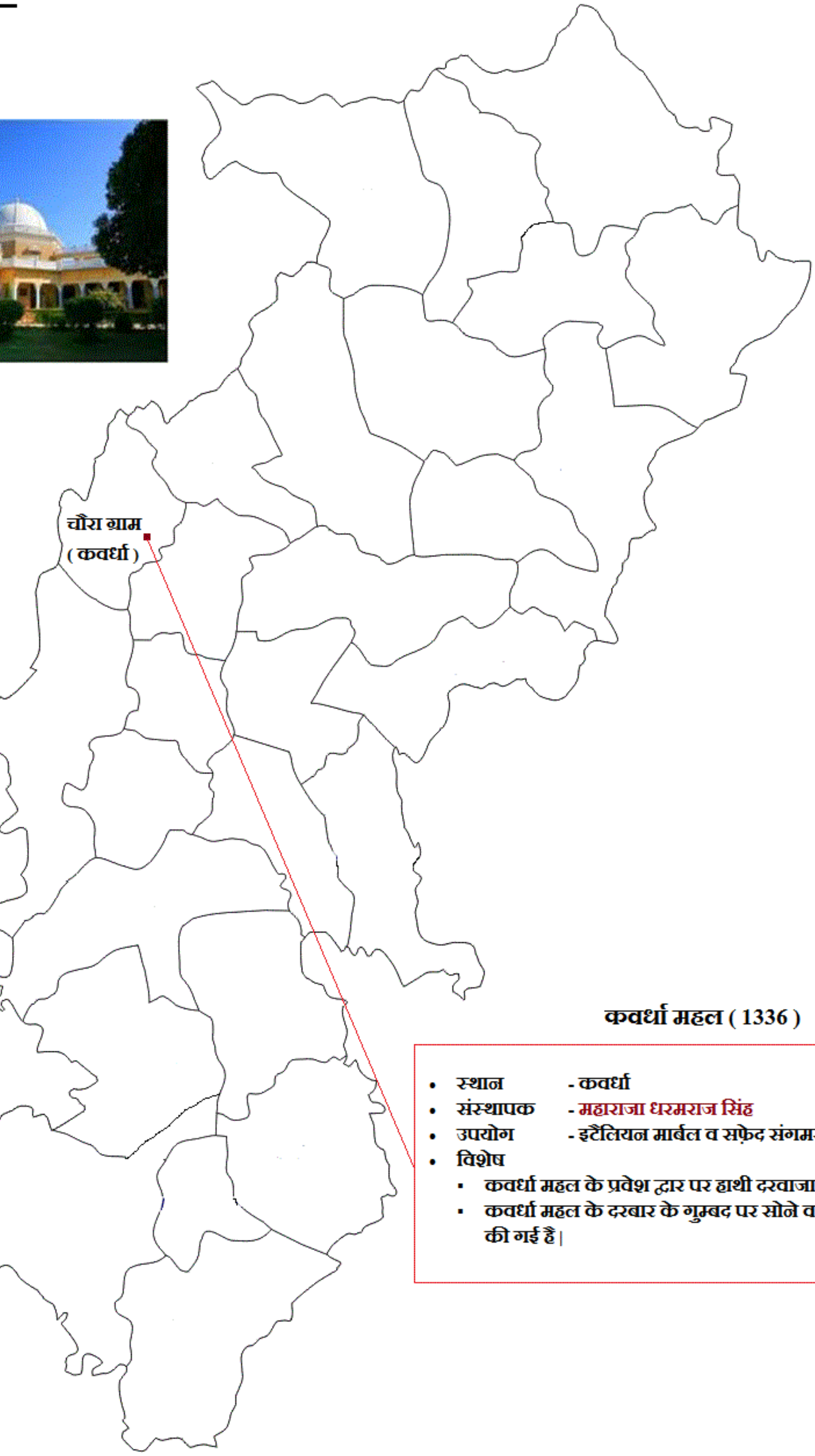

कवर्धा महल (1336)

- स्थान - कवर्धा
- संस्थापक - महाराजा धरमराज सिंह
- उपयोग - इटैलियन मार्बल व सफ़ेद संगमरमर
- विशेष
  - कवर्धा महल के प्रवेश द्वार पर हाथी दरवाजा या हाथी गेट है |
  - कवर्धा महल के दरबार के गुम्बद पर सोने व चांदी से नक्काशी की गई है |

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

---------------------- कवर्धा के फणिनाग वंश ----------------------

1. भोरमदेव मंदिर का निर्माण हुआ था :

(A) 11 वीं शताब्दी में (B) 12 वीं शताब्दी में
(C) 13 वीं शताब्दी में (D) 14 वीं शताब्दी में
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC PRE 2005]
[CGVyapam SI 2011]

उत्तर (A)

भोरमदेव मंदिर (1089)

- संस्थापक - गोपालदेव (फणिनाग वंश)
- स्थान - चौरा ग्राम (कवर्धा)
- स्मारक - राज्य संरक्षित स्मारक
- भोरमदेव - गोड़ आदिवासी देवता
- शैली - चंदेल-नागर शैली
- प्रतिमा - शिव मंदिर
- **विशेष - भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग** के **प्रथम महानिदेशक अलेक्जेंडर कनिंघम** सर्वप्रथम भोरमदेव पहुंचे |
- **संज्ञा**
  - छत्तीसगढ़ का **खजुराहो** (चंदेल वंशीय खजुराहो मंदिर के सदृश्य)
  - छत्तीसगढ़ का **कोणार्क मंदिर**
- **संरचना**
  - मण्डप को 16 खंभों ने संभाल रखा है |
  - गर्भगृह में **काले पत्थर से निर्मित एक शिवलिंग** स्थापित है |
  - मंदिर के बाहरी दीवारों में **"कामसूत्र" आसन के 54 कामुक मूर्तियाँ** उत्कीर्ण है |

2. भोरमदेव मंदिर का निर्माण हुआ :

(A) छिंदकनाग वंश काल में (B) नल वंश काल में
(C) फणिनाग वंश काल में (D) कल्चुरी वंश काल में
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC CIVIL JUDGE 2003]
[CGPSC ADPPO 2013]

उत्तर (C)

भोरमदेव मंदिर (1089)

- संस्थापक - गोपालदेव (फणिनाग वंश)
- स्थान - चौरा ग्राम (कवर्धा)
- स्मारक - राज्य संरक्षित स्मारक
- भोरमदेव - गोड़ आदिवासी देवता
- शैली - चंदेल-नागर शैली
- प्रतिमा - शिव मंदिर
- **विशेष - भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग** के **प्रथम महानिदेशक अलेक्जेंडर कनिंघम** सर्वप्रथम भोरमदेव पहुंचे |
- **संज्ञा**
  - छत्तीसगढ़ का **खजुराहो** (चंदेल वंशीय खजुराहो मंदिर के सदृश्य)
  - छत्तीसगढ़ का **कोणार्क मंदिर**
- **संरचना**
  - मण्डप को 16 खंभों ने संभाल रखा है |
  - गर्भगृह में **काले पत्थर से निर्मित एक शिवलिंग** स्थापित है |
  - मंदिर के बाहरी दीवारों में **"कामसूत्र" आसन के 54 कामुक मूर्तियाँ** उत्कीर्ण है |

3. कवर्धा महल डिजाइन और निर्मित किया गया है :

(A) महाराजा धरमराज सिंह द्वारा
(B) गुरु घासीदास द्वारा
(C) वल्लभाचार्य द्वारा
(D) राजा उजियार सिंह द्वारा
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC RDA 2014]

उत्तर (A)

कवर्धा महल (1336)

- स्थान - कवर्धा
- संस्थापक - **महाराजा धरमराज सिंह**
- उपयोग - इटैलियन मार्बल व सफ़ेद संगमरमर
- **विशेष**
  - कवर्धा महल के प्रवेश द्वार पर **हाथी दरवाजा या हाथी गेट** है |
  - कवर्धा महल के दरबार के गुम्बद पर **सोने व चांदी** से नक्काशी की गई है |

4. सूची 1 (छत्तीसगढ़ के मंदिर) को सूची 2 (निर्माणकर्ता राजवंश) से मिलाइए :

सूची 1		सूची 2	
(अ)	लक्ष्मण मंदिर सिरपुर	1	फणिनाग वंश
(ब)	भोरमदेव मंदिर कवर्धा	2	छिंदकनाग वंश
(स)	शिव मंदिर बारसूर	3	बाण वंश
(द)	शिव मंदिर पाली	4	पाण्डु वंश

(A) अ – 1 , ब – 2 , स – 3 , द – 4
(B) अ – 2 , ब – 3 , स – 4 , द – 1
(C) अ – 3 , ब – 4 , स – 1 , द – 2
(D) अ – 4 , ब – 1 , स – 2 , द – 3
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC AP 2009]

उत्तर (D)

लक्ष्मण मंदिर सिरपुर	- पाण्डु वंश
भोरमदेव मंदिर कवर्धा	- फणिनाग वंश
शिव मंदिर बारसूर	- छिंदकनाग वंश
शिव मंदिर पाली	- बाण वंश

5. फणिनाग वंश के प्रथम शासक थे :
(A) अहिराज देव (B) गोपाल देव
(C) रामचंद्र देव (D) मोनिंग देव
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (A)

<u>फणिनाग वंश</u>

- शासनकाल - 11 वीं शताब्दी से 1413 ई.
- संस्थापक - अहिराज
- अंतिम शासक - **मोनिंगदेव**
- राजधानी - कवर्धा
- धर्म - शैव धर्म
- मंदिर - शिव
- अधीनता - कल्चुरी वंश
- समकालीन - कल्चुरी वंश

6. फणिनाग वंश के अंतिम शासक थे :
(A) अहिराज देव (B) गोपाल देव
(C) रामचंद्र देव (D) मोनिंग देव
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGVyapam MFA 2012]

उत्तर (D)

<u>फणिनाग वंश</u>

- शासनकाल - 11 वीं शताब्दी से 1413 ई.
- संस्थापक - अहिराज
- अंतिम शासक - **मोनिंगदेव**
- राजधानी - कवर्धा
- धर्म - शैव धर्म
- मंदिर - शिव
- अधीनता - कल्चुरी वंश
- समकालीन - कल्चुरी वंश

7. मड़वा महल के संस्थापक है :
(A) गोपाल देव (B) ब्रह्मदेव
(C) रामचंद्र देव (D) मोनिंग देव
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (C)

<u>मड़वा महल / दूल्हादेव मंदिर (1349)</u>

- संस्थापक - रामचंद्रदेव (फणिनाग वंश)
- स्थान - चौरा ग्राम (कवर्धा)
- स्मारक - राज्य संरक्षित स्मारक
- शैली - चंदेल-नागर शैली
- प्रतिमा - शिव मंदिर
- **संज्ञा** - विवाह का प्रतीक
- **विशेष** - **रामचंद्र देव** ने मड़वा महल में ही कल्चुरी राजकुमारी **अम्बिका देवी** से विवाह किया
- **संरचना**
  - मण्डप को 16 खंभों ने संभाल रखा है |
  - गर्भगृह में **काले पत्थर से निर्मित एक शिवलिंग** स्थापित है |
  - मंदिर के बाहरी दीवारों में **"कामसूत्र" आसन के 54 कामुक मूर्तियाँ** उत्कीर्ण है |

8. छेरकी महल के संस्थापक है :
(A) गोपाल देव (B) ब्रह्मदेव
(C) रामचंद्र देव (D) मोनिंग देव
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (C)

छेरकी महल (शिव मंदिर)

- संस्थापक - रामचंद्रदेव (फणिनाग वंश)
- स्थान - चौरा ग्राम (कवर्धा)
- स्मारक - राज्य संरक्षित स्मारक
- शैली - चंदेल-नागर शैली
- प्रतिमा - शिव मंदिर
- विशेष - बकरी की सुगंध

9. फणिनाग वंश की राजधानी थी :
(A) सिरपुर (B) रतनपुर
(C) कवर्धा (D) मल्हार
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (C)

फणिनाग वंश

- शासनकाल - 11 वीं शताब्दी से 1413 ई.
- संस्थापक - अहिराज
- अंतिम शासक - **मोनिंगदेव**
- राजधानी - कवर्धा
- धर्म - शैव धर्म
- मंदिर - शिव
- अधीनता - कल्चुरी वंश
- समकालीन - कल्चुरी वंश

10. फणिनाग वंश के किस शासक को रायपुर कल्चुरी वंश के शासक ब्रह्मदेव ने युद्ध में पराजित किया ?
(A) गोपाल देव (B) अहिराज
(C) रामचंद्र देव (D) मोनिंग देव
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (D)

1413 - रायपुर कल्चुरी वंश के शासक **ब्रह्मदेव** ने **मोनिंगदेव** को युद्ध में पराजित किया |

11. भोरमदेव मंदिर को किस ब्रिटिश महानिदेशक ने पुरातात्विक स्मारक के रूप में अंकित किया ?
(A) अलेक्जेंडर कनिंघम (B) माइकल क्लार्क
(C) कैप्टन सीडवेल (D) जॉन स्टीफन
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (A)

भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग के प्रथम महानिदेशक **अलेक्जेंडर कनिंघम कनिंघम** सर्वप्रथम भोरमदेव पहुंचे |

12. मड़वा महल को किस ब्रिटिश महानिदेशक ने पुरातात्विक स्मारक के रूप में अंकित किया ?
(A) अलेक्जेंडर कनिंघम (B) माइकल क्लार्क
(C) कैप्टन सीडवेल (D) जॉन स्टीफन
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (A)

भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग के प्रथम महानिदेशक **अलेक्जेंडर कनिंघम** सर्वप्रथम भोरमदेव पहुंचे |

13. पचराही में कंकालिन माता प्रतिमा के खोजकर्ता है :
(A) अलेक्जेंडर कनिंघम (B) माइकल क्लार्क
(C) कैप्टन सीडवेल (D) जॉन स्टीफन
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (A)

पचराही में कंकालिन माता प्रतिमा के खोजकर्ता **अलेक्जेंडर कनिंघम** है |

14. भोरमदेव मंदिर के निकट स्थित राधाकृष्ण मंदिर के संस्थापक है :
(A) राजा धरमराज सिंह (B) राजा उजियार सिंह
(C) राजा बैजनाथ सिंह (D) राजा रघुवीर सिंह
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (B)

भोरमदेव मंदिर के निकट स्थित राधाकृष्ण मंदिर के संस्थापक **राजा उजियार सिंह** है |

15. कवर्धा स्थित लोहारा बावली के संस्थापक है :
(A) राजा धरमराज सिंह (B) राजा उजियार सिंह
(C) राजा बैजनाथ सिंह (D) राजा रघुवीर सिंह
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (C)

कवर्धा स्थित लोहारा बावली के संस्थापक **राजा बैजनाथ सिंह** है |

16. राजा उजियार सिंह द्वारा निर्मित उजियार सागर स्थित है :
(A) बस्तर (B) रतनपुर
(C) कवर्धा (D) जगदलपुर
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (C)

राजा उजियार सिंह द्वारा निर्मित उजियार सागर कवर्धा में स्थित है |

17. **मदन मंजरी महल मंदिर** स्थित है :
(A) बस्तर (B) रतनपुर
(C) कवर्धा (D) जगदलपुर
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (C)

मदन मंजरी महल मंदिर कवर्धा में स्थित है | **अलेक्जेंडर कनिंघम** ने इसे पुरातात्विक स्मारक के रूप में अंकित किया |

18. पुरातात्विक स्थल बकेला किस नदी के तट पर स्थित है :
(A) सकरी (B) मुरकती
(C) हाफ़ (D) सितावर
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (C)

पुरातात्विक स्थल बकेला तथा पचराही कवर्धा के बोड़ला तहसील में स्थित है | बकेला तथा पचराही **हाफ़ नदी** के तट पर स्थित है |

19. पुरातात्विक स्थल पचराही किस नदी के तट पर स्थित है :
(A) सकरी (B) मुरकती
(C) हाफ़ (D) सितावर
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (C)

पुरातात्विक स्थल बकेला तथा पचराही कवर्धा के बोड़ला तहसील में स्थित है | बकेला तथा पचराही **हाफ़ नदी** के तट पर स्थित है |

20. **अष्ट मंदिर रामचुवा** स्थित है :
(A) जैतपुरी ग्राम (कवर्धा) (B) चौरा ग्राम (कवर्धा)
(C) बकोड़ा ग्राम (कवर्धा) (D) चंदेली ग्राम (कवर्धा)
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (A)

अष्ट मंदिर रामचुवा कवर्धा के जैतपुर ग्राम में स्थित है |

---------------------- ALL THE BEST ----------------------

मुख्य परीक्षा आधारित महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

Question 1. **फणिनाग वंश के शासक गोपाल देव की भूमिका पर प्रकाश डालिए | (अंक : 2 , शब्द सीमा : 30)**

"छत्तीसगढ़ का खजुराहो" तथा "छत्तीसगढ़ का कोणार्क मंदिर" की संज्ञा से सुसज्जित भोरमदेव मंदिर का निर्माण 1089 में फणिनाग वंश के शासक गोपालदेव के द्वारा चौरा ग्राम (कवर्धा) में किया गया | यह मंदिर नागरशैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है | यह मंदिर गोड़ आदिवासी देवता भोरमदेव को समर्पित है | यह एक शिव मंदिर है | गोपाल देव ने **जाजल्यदेव I** (कल्चुरी वंश) की अधीनता स्वीकार किया था |

Question 2. **फणिनाग वंश के शासक रामचंद्र देव की भूमिका पर प्रकाश डालिए | (अंक : 2 , शब्द सीमा : 30)**

"विवाह का प्रतीक" तथा "विवाह मण्डप" की संज्ञा से सुसज्जित **मड़वा महल** का निर्माण 1349 में फणिनाग वंश के शासक रामचंद्रदेव के द्वारा चौरा ग्राम (कवर्धा) में किया गया | **रामचंद्र देव** ने मड़वा महल में ही कल्चुरी राजकुमारी **अम्बिका देवी** से विवाह किया | यह मंदिर चंदेल-नागर शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है | यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है | यह एक राज्य संरक्षित स्मारक है |

Question 3. **भोरमदेव मंदिर पर एक लेख लिखिए | (अंक : 8 , शब्द सीमा : 100)**

"छत्तीसगढ़ का खजुराहो" तथा "छत्तीसगढ़ का कोणार्क मंदिर" की संज्ञा से सुसज्जित भोरमदेव मंदिर का निर्माण 1089 में फणिनाग वंश के शासक गोपालदेव के द्वारा चौरा ग्राम (कवर्धा) में किया गया | यह मंदिर चंदेल-नागर शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है | यह मंदिर गोड़ आदिवासी देवता भोरमदेव को समर्पित है | यह एक शिव मंदिर है | यह एक राज्य संरक्षित स्मारक है | **भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग के प्रथम महानिदेशक अलेक्जेंडर कनिंघम** सर्वप्रथम भोरमदेव पहुंचे |

संरचना – मण्डप को 16 खंभों ने संभाल रखा है | गर्भगृह में **काले पत्थर से निर्मित एक शिवलिंग** स्थापित है | मंदिर के बाहरी दीवारों में **"कामसूत्र" आसन के 54 कामुक मूर्तियाँ** उत्कीर्ण है |

मूल्यांकन – भोरमदेव मंदिर का प्राकृतिक सौंदर्य के साथ ही अपनी वास्तुकला की पृष्ठभूमि के लिए भी अद्वितीय है | यह मंदिर छत्तीसगढ़ की सुंदरता का प्रतीक है | इसका छत्तीसगढ़ पर्यटन में अतुलनीय योगदान है | छत्तीसगढ़ राजस्व में इसका महत्वपूर्ण योगदान है |

Question 4. **मड़वा महल को रेखांकित कीजिये | (अंक : 8 , शब्द सीमा : 100)**

"विवाह का प्रतीक" तथा "विवाह मण्डप" की संज्ञा से सुसज्जित **मड़वा महल** का निर्माण 1349 में फणिनाग वंश के शासक रामचंद्रदेव के द्वारा चौरा ग्राम (कवर्धा) में किया गया | **रामचंद्र देव** ने मड़वा महल में ही कल्चुरी राजकुमारी **अम्बिका देवी** से विवाह किया | यह मंदिर चंदेल-नागर शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है | यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है | यह एक राज्य संरक्षित स्मारक है | भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग के प्रथम महानिदेशक **अलेक्जेंडर कनिंघम** सर्वप्रथम मड़वा महल पहुंचे |

संरचना –मण्डप को 16 खंभों ने संभाल रखा है | गर्भगृह में **काले पत्थर से निर्मित एक शिवलिंग** स्थापित है | मंदिर के बाहरी दीवारों में **"कामसूत्र" आसन के 54 कामुक मूर्तियाँ** उत्कीर्ण है |

मूल्यांकन – **मड़वा महल** का प्राकृतिक सौंदर्य के साथ ही अपनी वास्तुकला की पृष्ठभूमि के लिए भी अद्वितीय है | यह मंदिर छत्तीसगढ़ की सुंदरता का प्रतीक है | इसका छत्तीसगढ़ पर्यटन में अतुलनीय योगदान है | छत्तीसगढ़ राजस्व में इसका महत्वपूर्ण योगदान है |

RAKESH SAO

CSE (BIT , Durg)

DIRECTOR (PSC ACADEMY)

FOR COMPLETE NOTES VISIT

WWW.PSCACADEMY.IN

STEPS TO DOWNLOAD PDF NOTES

(1) www.pscacademy.in

(2) CLICK ON "DOWNLOAD"

(3) CLICK ON "PSC ACADEMY SPECIAL"

PSC ACADEMY
(RAIPUR)

2016 TOP 10 SELECTIONS

NISHANT TIWARI
CGPSC 2016
7TH POST RANK

PUNESHWAR VERMA
STATE ENGG SERVICES
2ND RANK

CHANDRAKANT BAGHEL
FOOD INSPECTOR
10TH RANK

SURESH PIPRE
ACF 2016
3RD RANK (CAT)

CGPSC NEW BATCHES START FROM 1ST OCTOBER

CGPSC PRE / CG VYAPAM	TIME - 5PM TO 7PM
CGPSC MAINS	TIME - 7PM TO 9PM

DOWNLOAD ALL STUDY MATERIALS FROM
WWW.PSCACADEMY.IN

PSC ACADEMY
BESIDE DENA BANK, GOL CHOWK,
ROHANIPURAM, D.D. NAGAR,
NEAR NIT RAIPUR, RAIPUR (C.G.)

CONTACT 9827112187
9302766733

RAKESH SAO
CSE (BIT , Durg)
DIRECTOR